

स्वतंत्रता के बाद सहारनपुर जनपद में जातीय एवं सामुदायिक संरचना का विकास

विश्वास कुमार,

शोधार्थी (इतिहास विभाग)

कुमारी मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय बादलपुर, गौतमबुद्ध नगर, (उ०प्र०)

डॉ. आशा रानी

प्रोफेसर (इतिहास विभाग)

कुमारी मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय बादलपुर, गौतमबुद्ध नगर, (उ०प्र०)

सारांश

स्वतंत्रता के बाद भारतीय समाज में संविधान, लोकतांत्रिक राजनीति, भूमि-सुधार, शिक्षा, आरक्षण, नगरीकरण और आर्थिक विविधीकरण के कारण जातीय तथा सामुदायिक संबंधों में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए। पश्चिमी उत्तर प्रदेश का सहारनपुर जनपद इस परिवर्तन को समझने के लिए विशेष रूप से उपयोगी क्षेत्र है, क्योंकि यहाँ कृषि-प्रधान ग्रामीण समाज, नगरीय व्यापार, प्रसिद्ध काष्ठ-शिल्प, धार्मिक संस्थाएँ और अनेक सामाजिक समुदाय एक साथ विकसित हुए हैं। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य 1947 के बाद सहारनपुर की जातीय और सामुदायिक संरचना में आए ऐतिहासिक परिवर्तनों का विश्लेषण करना है। अध्ययन ऐतिहासिक-वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है और इसमें भारत की जनगणना, जिला जनगणना पुस्तिकाओं, जिला गजेटियर तथा प्रासंगिक समाजशास्त्रीय और राजनीतिक अध्ययनों का उपयोग किया गया है। विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि जाति का प्रभाव समाप्त नहीं हुआ, बल्कि उसका स्वरूप परंपरागत पेशागत और अनुष्ठानिक पदानुक्रम से आगे बढ़कर शिक्षा, प्रतिनिधित्व, सामाजिक संगठन, राजनीतिक भागीदारी, रोजगार और संसाधनों तक पहुँच से जुड़ गया। 2011 में सहारनपुर की कुल जनसंख्या 34,66,382 थी; धार्मिक संरचना में हिन्दू 56.74 प्रतिशत और मुस्लिम 41.95 प्रतिशत थे। अनुसूचित जाति की जनसंख्या लगभग 22.05 प्रतिशत थी। अध्ययन यह निष्कर्ष प्रस्तुत करता है कि सहारनपुर में सामाजिक परिवर्तन को “जाति के लोप” के रूप में नहीं, बल्कि जाति, समुदाय, वर्ग, शिक्षा, राजनीति और नगरीकरण के पारस्परिक पुनर्गठन के रूप में समझना अधिक उपयुक्त है।

मुख्य शब्द: सहारनपुर, जातीय संरचना, सामुदायिक संरचना, अनुसूचित जाति, सामाजिक परिवर्तन, नगरीकरण

1. प्रस्तावना

भारतीय स्वतंत्रता ने केवल औपनिवेशिक शासन का अंत नहीं किया, बल्कि नागरिकता, सामाजिक न्याय, प्रतिनिधित्व और समानता की नई संवैधानिक व्यवस्था भी स्थापित की। उत्तर भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में स्वतंत्रता के समय सामाजिक जीवन भूमि-स्वामित्व, जाति, धार्मिक समुदाय, परंपरागत व्यवसाय और स्थानीय प्रतिष्ठा से गहराई से जुड़ा था। सहारनपुर

जनपद भी इसी व्यापक सामाजिक संरचना का अंग था, किंतु इसकी भौगोलिक स्थिति, कृषि की उन्नत परंपरा, नगरों और कस्बों का विकास, धार्मिक संस्थानों की उपस्थिति तथा काष्ठ-शिल्प और व्यापार ने इसे विशिष्ट सामाजिक बहुलता प्रदान की।

जातीय संरचना का अध्ययन करते समय जाति और धर्म को एक ही श्रेणी मानना उचित नहीं है। “हिन्दू”, “मुस्लिम”, “सिख”, “जैन” अथवा “ईसाई” धार्मिक समुदाय हैं, जबकि अनुसूचित जाति एक संवैधानिक-सामाजिक श्रेणी है। इसी प्रकार हिन्दू और मुस्लिम दोनों समाजों के भीतर विविध जातियाँ, बिरादरियाँ, पेशागत समूह तथा वर्गीय अंतर पाए जाते हैं। इसलिए इस शोध में धार्मिक संरचना, अनुसूचित जाति संरचना, ग्रामीण शक्ति-संबंध, व्यवसाय, शिक्षा और राजनीतिक भागीदारी को परस्पर संबद्ध लेकिन पृथक विश्लेषणात्मक स्तरों पर देखा गया है।

2. साहित्य समीक्षा

भारतीय जाति व्यवस्था और सामाजिक परिवर्तन पर एम. एन. श्रीनिवास ने संस्कृतिकरण, पश्चिमीकरण और “प्रभुत्वशाली जाति” जैसी अवधारणाओं के माध्यम से यह समझाया कि जाति एक जड़ संरचना नहीं है, बल्कि सामाजिक शक्ति, भूमि, संख्या, शिक्षा और राजनीतिक अवसरों के साथ बदलती रहती है (श्रीनिवास, 1968)। उत्तर भारत में निम्न एवं पिछड़ी जातियों के राजनीतिक उदय को जाफरलो (2003) ने लोकतांत्रिक भागीदारी की “मूक क्रांति” के रूप में विश्लेषित किया। उत्तर प्रदेश के संदर्भ में पै (2002) ने दलित राजनीतिक दावेदारी और बहुजन राजनीति की भूमिका को रेखांकित किया।

पश्चिमी उत्तर प्रदेश पर किए गए क्षेत्रीय अध्ययनों से भी यह स्पष्ट होता है कि कृषि परिवर्तन, गैर-कृषि रोजगार, शिक्षा, गतिशीलता और लोकतांत्रिक राजनीति ने पुराने ग्रामीण शक्ति-संबंधों को जटिल बनाया है। जेफ्री, जेफ्री और जेफ्री (2008) ने पश्चिमी उत्तर प्रदेश में दलित युवाओं की राजनीतिक सक्रियता का अध्ययन करते हुए दिखाया कि प्रतिनिधित्व और राजनीतिक चेतना बढ़ने के बावजूद स्थानीय सामाजिक-आर्थिक असमानताएँ स्वतः समाप्त नहीं होतीं। कुमार (2018) ने पश्चिमी उत्तर प्रदेश में कृषि परिवर्तन, जातीय शक्ति, ग्रामीण-नगरीय संपर्क और नई सामाजिकता के बीच संबंध को रेखांकित किया।

3. अध्ययन के उद्देश्य

इस अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य हैं: (i) स्वतंत्रता के बाद सहारनपुर जनपद की जातीय एवं सामुदायिक संरचना में आए परिवर्तनों की ऐतिहासिक व्याख्या करना; (ii) जनसंख्या वृद्धि, प्रशासनिक पुनर्गठन और नगरीकरण के प्रभावों को समझना; (iii) अनुसूचित जातियों तथा विभिन्न ग्रामीण सामाजिक समूहों की बदलती स्थिति का विश्लेषण करना; (iv) धार्मिक समुदायों की जनसांख्यिकीय संरचना और सामाजिक अंतःक्रिया को रेखांकित करना; (v) भूमि, कृषि, शिक्षा, व्यवसाय, शिल्प और लोकतांत्रिक राजनीति द्वारा उत्पन्न सामाजिक गतिशीलता का अध्ययन करना; तथा (vi) जातीय

पहचान के परंपरागत स्वरूप से आधुनिक प्रतिनिधित्व और संसाधन-आधारित स्वरूप तक के परिवर्तन का आकलन करना।

4. शोध पद्धति एवं स्रोत

यह शोध ऐतिहासिक, वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है। अध्ययन में मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है। जनसांख्यिकीय आँकड़ों के लिए भारत की जनगणना 1991, 2001 और 2011 की जिला जनगणना पुस्तिकाओं, 2011 की धार्मिक समुदाय तालिका C-01 तथा अनुसूचित जाति संबंधी A-10 सारणी को आधार बनाया गया है। ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के लिए सहारनपुर जिला गजेटियर तथा उत्तर प्रदेश जिला गजेटियर का उपयोग किया गया है। सामाजिक परिवर्तन की व्याख्या के लिए जाति, दलित राजनीति और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के ग्रामीण परिवर्तन से संबंधित अकादमिक अध्ययनों को सम्मिलित किया गया है।

अध्ययन की एक महत्वपूर्ण पद्धतिगत सीमा प्रशासनिक सीमा-परिवर्तन है। वर्तमान हरिद्वार क्षेत्र लंबे समय तक सहारनपुर जिले का भाग था और 1988 में अलग जिला बना। इसलिए 1951 से 1981 तक के पुराने “सहारनपुर जिला” आँकड़ों को वर्तमान जिले की सीमा से सीधे जोड़ना भ्रामक हो सकता है। इसी कारण जनसंख्या वृद्धि के तुलनात्मक ग्राफ में 1991, 2001 और 2011 को लिया गया है, जब वर्तमान सहारनपुर की प्रशासनिक संरचना अधिक तुलनीय थी। जातिवार आँकड़ों में भी सावधानी आवश्यक है, क्योंकि आधुनिक जनगणना सभी सामान्य और अन्य पिछड़ा वर्ग जातियों के जिला-स्तरीय प्रतिशत प्रकाशित नहीं करती। अतः इस शोध में अनाधिकारिक जातिवार प्रतिशतों से बचते हुए अनुसूचित जाति और धार्मिक समुदायों के उपलब्ध आधिकारिक आँकड़ों का उपयोग किया गया है।

5. स्वतंत्रता के समय की सामाजिक पृष्ठभूमि

स्वतंत्रता के समय सहारनपुर का अधिकांश ग्रामीण जीवन कृषि और उससे संबंधित व्यवसायों पर आधारित था। भूमि केवल आर्थिक संसाधन नहीं थी, बल्कि स्थानीय प्रतिष्ठा, नेतृत्व, श्रम-संबंध और सामाजिक प्रभाव का भी स्रोत थी। विभिन्न कृषक समुदायों, भूमिधर समूहों, कारीगर जातियों, सेवा-समूहों और भूमिहीन श्रमिकों के बीच संबंध जाति और आर्थिक स्थिति दोनों से निर्धारित होते थे। विवाह, आवासीय बस्तियाँ, पारिवारिक नेटवर्क और व्यवसाय अक्सर जातीय सीमाओं से प्रभावित होते थे। दूसरी ओर सहारनपुर नगर, देवबंद, गंगोह, नकुड़ और अन्य कस्बों में व्यापार, धार्मिक शिक्षा, मंडी, शिल्प और सेवा क्षेत्र ने अधिक मिश्रित सामाजिक संपर्क विकसित किए।

1947 के बाद संविधान ने समान नागरिकता, अस्पृश्यता उन्मूलन, मौलिक अधिकार और अनुसूचित जातियों के लिए विशेष संरक्षण प्रदान किया। यह परिवर्तन स्थानीय समाज में तत्काल समानता नहीं लाया, किंतु सामाजिक दावेदारी की वैधानिक भाषा बदल गई। पंचायत, विधानसभा और लोकसभा चुनावों में सार्वभौमिक मताधिकार ने उन समूहों को भी राजनीतिक महत्व दिया जिनकी पारंपरिक ग्रामीण सत्ता सीमित थी। इसलिए स्वतंत्रता-पश्चात काल में जाति की भूमिका

केवल सामाजिक प्रतिष्ठा तक सीमित नहीं रही; वह मतदाता समूह, प्रतिनिधित्व, आरक्षण, संगठन और राज्य-संसाधनों तक पहुँच के प्रश्नों से भी जुड़ने लगी।

6. प्रशासनिक पुनर्गठन एवं जनसंख्या परिवर्तन

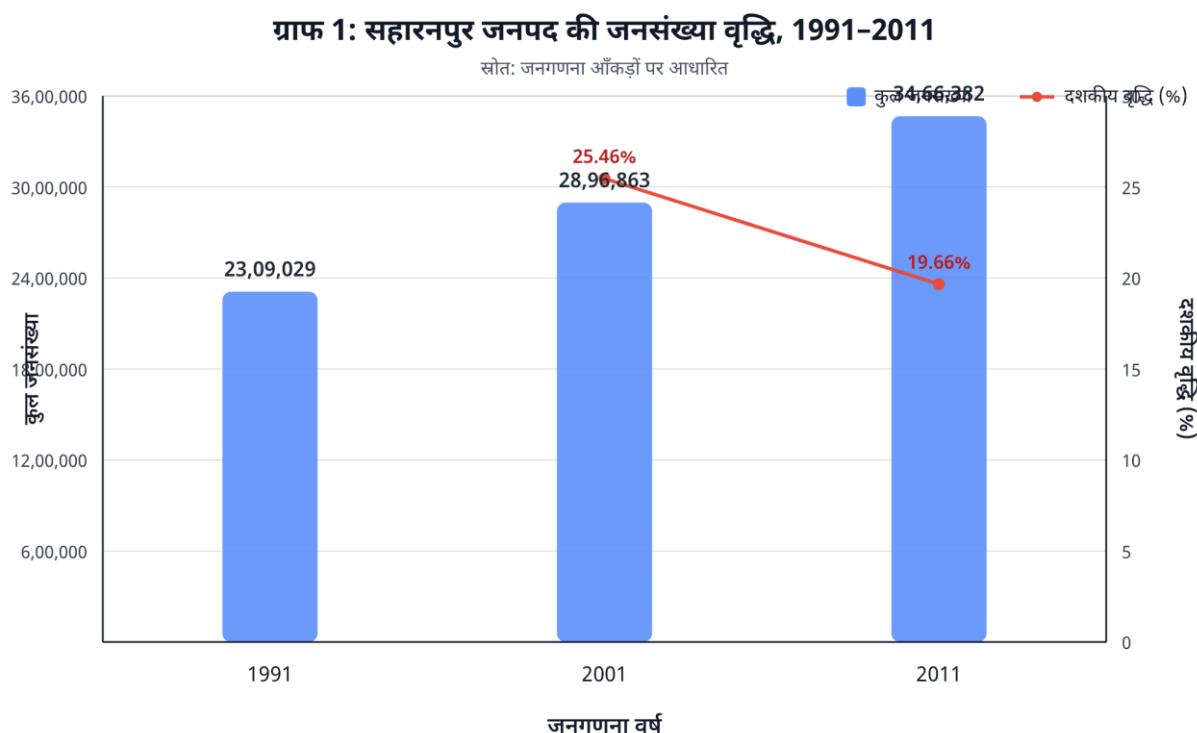
सहारनपुर के सामाजिक विकास को समझने में 1988 का प्रशासनिक पुनर्गठन निर्णायक है। हरिद्वार के पृथक होने से पुराने सहारनपुर जिले का क्षेत्रफल और जनसंख्या संरचना बदल गई। इसके बाद 1991 से उपलब्ध आँकड़े वर्तमान जिले के विकास को अधिक उपयुक्त रूप में प्रस्तुत करते हैं। 1991 में सहारनपुर की जनसंख्या लगभग 23.09 लाख थी, जो 2001 में 28.97 लाख और 2011 में 34.66 लाख हो गई। 1991 से 2001 के बीच वृद्धि लगभग 25.46 प्रतिशत और 2001 से 2011 के बीच लगभग 19.66 प्रतिशत रही। यह वृद्धि आवास, शिक्षा, बाजार, रोजगार और शहरी सेवाओं की बढ़ती माँग से जुड़ी थी।

सारणी 1: सहारनपुर जनपद की जनसंख्या वृद्धि, 1991-2011

जनगणना वर्ष	कुल जनसंख्या	दशकीय वृद्धि
1991	23,09,029	—
2001	28,96,863	25.46%
2011	34,66,382	19.66%

स्रोत: भारत की जनगणना, जिला जनगणना पुस्तिका—सहारनपुर (1991, 2001, 2011)।

चित्र 1: सहारनपुर जनपद की जनसंख्या वृद्धि, 1991-2011



स्रोत: सारणी 1 के आधार पर लेखक द्वारा तैयार।

7. जातीय संरचना और अनुसूचित जातियों की बदलती स्थिति

सहारनपुर के ग्रामीण समाज में जाट, गुर्जर, सैनी, त्यागी, राजपूत, ब्राह्मण, वैश्य, कश्यप तथा अन्य अनेक जाति-समूहों की ऐतिहासिक उपस्थिति रही है। इनके अतिरिक्त जाटव/चमार, वाल्मीकि, कोरी और अन्य अनुसूचित जाति समूह जिले की सामाजिक और श्रम संरचना का महत्वपूर्ण भाग रहे हैं। इन समुदायों की स्थिति भूमि, पेशा, शिक्षा और स्थानीय शक्ति-संबंधों के अनुसार भिन्न रही। चूँकि सभी गैर-अनुसूचित जातियों के लिए विश्वसनीय जिला-स्तरीय जनगणना प्रतिशत उपलब्ध नहीं हैं, इसलिए शोध किसी जाति विशेष की अनधिकृत संख्या प्रस्तुत करने के बजाय संरचनात्मक परिवर्तन पर ध्यान देता है।

2011 की जनगणना के अनुसार सहारनपुर में अनुसूचित जाति की कुल जनसंख्या लगभग 7.64 लाख थी, जो कुल जनसंख्या का लगभग 22.05 प्रतिशत थी। अनुसूचित जाति के भीतर चमार/धुसिया/झुसिया/जाटव श्रेणी सबसे बड़ी थी। स्वतंत्रता के बाद आरक्षण, छात्रवृत्ति, सरकारी रोजगार, पंचायत प्रतिनिधित्व, शहरी श्रम-बाजार और शिक्षा ने सामाजिक गतिशीलता के नए रास्ते बनाए। पै (2002) तथा जाफरलो (2003) के अध्ययन बताते हैं कि उत्तर प्रदेश में दलित राजनीति ने सामाजिक सम्मान, प्रतिनिधित्व और राज्य संस्थाओं से संबंध को नई दिशा दी। सहारनपुर में भी शिक्षा और राजनीतिक संगठन ने सामाजिक आत्म-पहचान तथा सार्वजनिक दावेदारी को मजबूत किया।

8. धार्मिक एवं सामुदायिक संरचना

सहारनपुर की सामाजिक पहचान का दूसरा प्रमुख पक्ष उसकी धार्मिक बहुलता है। 2011 की जनगणना में हिन्दू आबादी 56.74 प्रतिशत और मुस्लिम आबादी 41.95 प्रतिशत दर्ज की गई। सिख, जैन, ईसाई और बौद्ध समुदायों की संख्या अपेक्षाकृत कम है, किंतु व्यापार, शिक्षा, कृषि और नगरीय जीवन में उनकी उपस्थिति जिले की बहुधार्मिक संरचना का हिस्सा है। हिन्दू और मुस्लिम दोनों समुदाय जिले के ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में व्यापक रूप से उपस्थित हैं, यद्यपि तहसील और कस्बा स्तर पर अनुपात अलग-अलग हो सकता है।

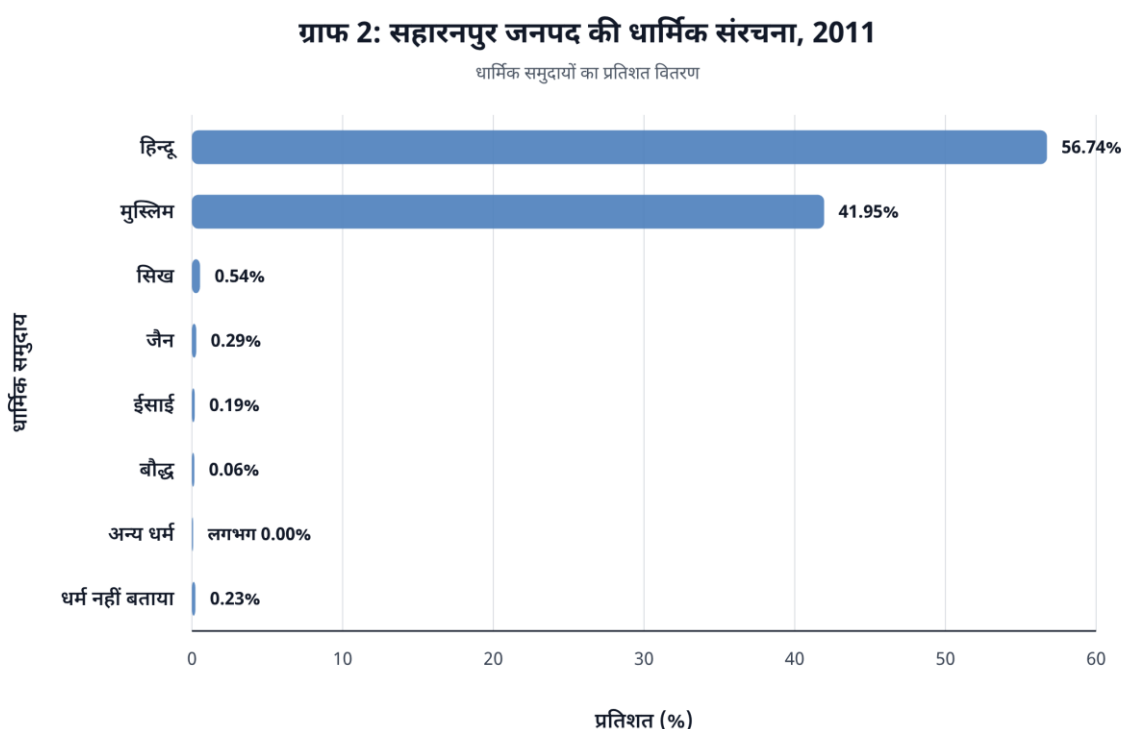
धार्मिक समुदायों की निकट उपस्थिति ने सहारनपुर में सहयोग और अंतःक्रिया के अनेक क्षेत्र बनाए। कृषि मंडियाँ, काष्ठ उद्योग, परिवहन, खुदरा व्यापार, निर्माण, शिक्षा और प्रशासन ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ विभिन्न समुदाय आर्थिक रूप से परस्पर निर्भर हैं। देवबंद की धार्मिक-शैक्षणिक पहचान तथा सहारनपुर नगर की व्यापारिक और शिल्प-आधारित पहचान इस विविधता के दो विशिष्ट रूप प्रस्तुत करती हैं। साथ ही, उत्तर भारत के अन्य क्षेत्रों की तरह सहारनपुर में सामुदायिक तनाव के प्रसंग भी इतिहास का हिस्सा रहे हैं; किंतु किसी जिले की सामुदायिक संरचना को केवल संघर्ष से परिभाषित करना अधूरा होगा। दैनिक जीवन का बड़ा भाग बाजार, श्रम, शिक्षा, पढ़ाई और प्रशासन के स्तर पर सह-अस्तित्व और परस्पर संपर्क से निर्मित होता है।

सारणी 2: सहारनपुर जनपद की प्रमुख सामुदायिक एवं अनुसूचित जाति संरचना, 2011

श्रेणी	प्रकार	जनसंख्या	हिस्सेदारी
हिन्दू	धार्मिक समुदाय	19,66,892	56.74%
मुस्लिम	धार्मिक समुदाय	14,54,052	41.95%
सिख	धार्मिक समुदाय	18,627	0.54%
जैन	धार्मिक समुदाय	10,208	0.29%
ईसाई	धार्मिक समुदाय	6,523	0.19%
बौद्ध	धार्मिक समुदाय	1,937	0.06%
अनुसूचित जातियाँ (कुल)	संवैधानिक/सामाजिक श्रेणी	7,64,450	22.05%

नोट: धार्मिक समुदाय और अनुसूचित जाति अलग सांख्यिकीय श्रेणियाँ हैं; इन्हें जोड़कर कुल जनसंख्या नहीं निकाली जानी चाहिए। स्रोत: जनगणना 2011, C-01 एवं A-10 परिशिष्ट।

चित्र 2: सहारनपुर जनपद की धार्मिक संरचना, जनगणना 2011



स्रोत: भारत की जनगणना 2011, C-01 के आधार पर लेखक द्वारा तैयार।

9. कृषि, भूमि और ग्रामीण शक्ति-संबंध

पश्चिमी उत्तर प्रदेश में हरित क्रांति, सिंचाई, गन्ना अर्थव्यवस्था, यंत्रीकरण और बाजार के विस्तार ने ग्रामीण समाज को गहराई से प्रभावित किया। सहारनपुर में गन्ना, गेहूँ, धान और बागवानी से जुड़ी कृषि ने कृषक परिवारों को नकद आय

तथा बाजार से अधिक संबंध दिया। ट्रैक्टर, थ्रेशर, सिंचाई पंप और परिवहन साधनों के प्रसार से पारंपरिक कृषि श्रम की प्रकृति बदली। कई काम, जो पहले विशिष्ट जातीय श्रम-संबंधों के माध्यम से होते थे, मजदूरी, ठेका या मशीन-आधारित व्यवस्था में परिवर्तित हुए।

कुमार (2018) ने पश्चिमी उत्तर प्रदेश में कृषि परिवर्तन के साथ गैर-कृषि रोजगार, शिक्षा और ग्रामीण-नगरीय गतिशीलता को नई सामाजिकता से जोड़ा है। सहारनपुर में भी भूमि आज महत्वपूर्ण संसाधन है, पर सामाजिक शक्ति का एकमात्र आधार नहीं रही। शिक्षा, राजनीतिक संपर्क, सरकारी सेवा, व्यापार, ठेकेदारी और प्रवासन ने नए शक्ति-स्रोत पैदा किए। इससे कुछ परंपरागत भूमिधर समूहों का प्रभाव नए आर्थिक वर्गों के साथ प्रतिस्पर्धी हुआ, जबकि भूमिहीन समुदायों के लिए गाँव से बाहर रोजगार और शिक्षा सामाजिक निर्भरता कम करने के साधन बने।

10. शहरीकरण, काष्ठ-शिल्प और पेशागत परिवर्तन

सहारनपुर का प्रसिद्ध काष्ठ-शिल्प उद्योग जाति, समुदाय और पेशागत परिवर्तन को समझने का महत्वपूर्ण उदाहरण है। इस उद्योग में पारिवारिक कौशल, उस्ताद-शागिर्द परंपरा, कारीगर समुदाय, व्यापारी, ठेकेदार, निर्यातक और मजदूर एक विस्तृत उत्पादन श्रृंखला में जुड़े हैं। समय के साथ हाथ से नक्काशी, मशीन कार्य, डिजाइन, फिनिशिंग, पैकेजिंग और विपणन के बीच श्रम-विभाजन बढ़ा। इससे परंपरागत कारीगरी और आधुनिक बाजार का मिश्रित रूप सामने आया।

कारिगरों पर किए गए अध्ययनों में कम मजदूरी, शिक्षा की कमी, अनौपचारिक प्रशिक्षण और स्वास्थ्य जोखिम जैसी समस्याएँ दर्ज की गई हैं। पेशागत विरासत अब भी महत्वपूर्ण है, किंतु युवा पीढ़ी के लिए कारीगरी एकमात्र उपलब्ध पहचान नहीं रही; वे शिक्षा, सेवा, व्यापार और अन्य शहरी रोजगारों की ओर भी जाते हैं। यह प्रवृत्ति जाति-पेशा संबंध की कठोरता को कम करती है। दूसरी ओर व्यवसायिक नेटवर्क और कौशल का पारिवारिक हस्तांतरण कुछ समुदायों में पेशागत निरंतरता बनाए रखते हैं। इसलिए नगरीकरण का प्रभाव “परंपरा बनाम आधुनिकता” के सरल द्वंद्व के बजाय मिश्रित और बहुस्तरीय है।

11. शिक्षा, आरक्षण और सामाजिक गतिशीलता

स्वतंत्रता के बाद विद्यालयों, महाविद्यालयों, तकनीकी शिक्षा और विश्वविद्यालयों तक पहुँच के विस्तार ने सामाजिक गतिशीलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। शिक्षा ने परंपरागत जातिगत पेशे से बाहर निकलने का अवसर दिया और सरकारी तथा निजी रोजगारों के नए मार्ग खोले। आरक्षण नीति ने अनुसूचित जातियों के लिए शिक्षा और सरकारी सेवाओं में प्रतिनिधित्व की संस्थागत संभावना बढ़ाई। इसके साथ छात्रवृत्तियाँ, आवासीय सुविधाएँ और सामाजिक कल्याण योजनाएँ भी महत्वपूर्ण रहीं।

परंतु शिक्षा का लाभ सभी समुदायों और वर्गों तक समान गति से नहीं पहुँचा। आर्थिक स्थिति, लिंग, ग्रामीण-शहरी स्थान, परिवार की शैक्षणिक पृष्ठभूमि और विद्यालय की गुणवत्ता अवसरों को प्रभावित करते हैं। इस कारण जाति के भीतर भी नई असमानताएँ विकसित हो सकती हैं। फिर भी शिक्षा ने सामाजिक सम्मान, विवाह संबंध, पेशागत विकल्प और

राजनीतिक जागरूकता पर प्रभाव डाला। शिक्षित युवा जातीय पहचान को पूरी तरह त्यागे बिना अधिक व्यापक पेशागत और नागरिक पहचान विकसित कर रहे हैं।

12. लोकतांत्रिक राजनीति और सामुदायिक प्रतिनिधित्व

सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार ने स्वतंत्रता के बाद सामाजिक समूहों की राजनीतिक शक्ति का आधार बदल दिया। जनसंख्या, संगठन और मतदान क्षमता ने जातियों तथा समुदायों को स्थानीय और प्रांतीय राजनीति में महत्वपूर्ण बनाया। पंचायत और नगर निकायों में आरक्षण ने अनुसूचित जातियों और महिलाओं के प्रतिनिधित्व को संस्थागत रूप दिया। दलित और पिछड़ा वर्ग राजनीति के उभार ने यह संदेश मजबूत किया कि सामाजिक प्रतिष्ठा केवल परंपरागत पदानुक्रम से नहीं, बल्कि चुनावी भागीदारी, संगठन और राज्य सत्ता तक पहुँच से भी निर्धारित हो सकती है।

जेफ्री आदि (2008) का अध्ययन बताता है कि पश्चिमी उत्तर प्रदेश में युवा दलित राजनीतिक कार्यकर्ताओं का उभार स्थानीय सत्ता के पुराने स्वरूप को चुनौती देता है, हालांकि आर्थिक ढाँचे तुरंत नहीं बदलते। सहारनपुर में भी राजनीतिक लामबंदी ने जातीय पहचान को सार्वजनिक प्रतिनिधित्व की भाषा दी। इसी के साथ धार्मिक समुदाय भी नागरिक मुद्दों, शिक्षा, रोजगार, सुरक्षा, स्थानीय विकास और राजनीतिक प्रतिनिधित्व के आधार पर संगठित होते हैं। आधुनिक सहारनपुर की राजनीति में जाति और धर्म महत्वपूर्ण हैं, लेकिन वे अकेले निर्धारक नहीं हैं; वर्ग, ग्रामीण-शहरी हित, किसान प्रश्न, रोजगार और स्थानीय नेतृत्व भी समान रूप से महत्वपूर्ण हो सकते हैं।

13. प्रमुख निष्कर्ष एवं चर्चा

अध्ययन से पाँच प्रमुख प्रवृत्तियाँ सामने आती हैं। प्रथम, स्वतंत्रता के बाद जाति का लोप नहीं हुआ, बल्कि उसकी सामाजिक भूमिका बदली। परंपरागत पेशा और अनुष्ठानिक प्रतिष्ठा के साथ अब शिक्षा, राजनीति, नौकरियाँ और संगठन भी जातीय स्थिति को प्रभावित करते हैं। द्वितीय, अनुसूचित जातियों की बड़ी जनसंख्या और संवैधानिक प्रतिनिधित्व ने जिले की लोकतांत्रिक राजनीति में दलित दावेदारी को स्थायी महत्व दिया। तृतीय, हिन्दू और मुस्लिम समुदायों की बड़ी आबादी ने सहारनपुर को ऐसी बहुधार्मिक सामाजिक संरचना प्रदान की जिसमें सहयोग, प्रतिस्पर्धा और राजनीतिक लामबंदी सभी संभावनाएँ मौजूद हैं।

चतुर्थ, कृषि और भूमि की भूमिका बनी हुई है, लेकिन गैर-कृषि रोजगार, नगरीकरण, शिक्षा, काष्ठ-उद्योग और प्रवासन ने सामाजिक शक्ति के स्रोतों को विविध बनाया है। पंचम, सामाजिक परिवर्तन असमान है। एक ही जाति अथवा धार्मिक समुदाय के भीतर वर्ग, शिक्षा, लिंग, पेशा और निवास-स्थान के आधार पर जीवन-अवसरों में अंतर बढ़ा है। इसलिए आज सहारनपुर की जातीय एवं सामुदायिक संरचना को केवल पारंपरिक वर्ण-जाति मॉडल या केवल धार्मिक जनसंख्या अनुपात से नहीं समझा जा सकता। यह संरचना लोकतंत्र, बाजार, शिक्षा, भूमि, शहरीकरण और पहचान की राजनीति के संयुक्त प्रभाव से निर्मित होती है।

14. निष्कर्ष

स्वतंत्रता के बाद सहारनपुर जनपद की जातीय एवं सामुदायिक संरचना ने व्यापक परिवर्तन का अनुभव किया है। 1947 के समय कृषि, भूमि, परंपरागत व्यवसाय और जातीय पदानुक्रम स्थानीय समाज के प्रमुख निर्धारक थे। संविधान, भूमि-सुधार, लोकतांत्रिक राजनीति, आरक्षण, शिक्षा, हरित क्रांति, शहरीकरण और गैर-कृषि रोजगार ने इस व्यवस्था में नई गतिशीलता उत्पन्न की। जाति आज भी विवाह, सामाजिक नेटवर्क, राजनीतिक पहचान और स्थानीय संगठन में महत्वपूर्ण है, परंतु उसका संबंध पेशे से पहले की तुलना में कम कठोर हुआ है।

2011 के आँकड़े सहारनपुर की बहुल सामाजिक संरचना को स्पष्ट करते हैं: कुल जनसंख्या 34.66 लाख से अधिक, हिन्दू आबादी 56.74 प्रतिशत, मुस्लिम आबादी 41.95 प्रतिशत तथा अनुसूचित जाति आबादी लगभग 22.05 प्रतिशत थी। ये श्रेणियाँ एक-दूसरे की सरल प्रतिस्पर्धी इकाइयाँ नहीं हैं, बल्कि जिले की बहुस्तरीय सामाजिक बनावट के अलग-अलग आयाम हैं। स्वतंत्रता-पश्चात परिवर्तन का सबसे महत्वपूर्ण परिणाम यह है कि सामाजिक समूह अब केवल जन्म-आधारित स्थानीय पदानुक्रम के भीतर कार्य नहीं करते; वे शिक्षा, रोजगार, प्रतिनिधित्व, बाजार और राज्य संस्थाओं से भी अपनी स्थिति निर्धारित करते हैं।

अतः सहारनपुर का अनुभव भारतीय सामाजिक परिवर्तन की उस व्यापक प्रक्रिया का क्षेत्रीय उदाहरण है जिसमें परंपरा समाप्त नहीं होती, बल्कि आधुनिक संस्थाओं के साथ पुनर्गठित होती है। भविष्य में गाँव, कस्बा और वार्ड स्तर पर प्राथमिक सर्वेक्षण, मौखिक इतिहास और परिवार-आधारित दीर्घकालिक अध्ययन किए जाने चाहिए, ताकि भूमि स्वामित्व, शिक्षा, अंतर्जातीय संबंध, महिला भागीदारी, युवा रोजगार और धार्मिक समुदायों के बदलते सामाजिक नेटवर्क का अधिक सूक्ष्म विश्लेषण संभव हो सके।

संदर्भ सूची (APA 7वीं शैली)

1. भारत के महापंजीयक एवं जनगणना आयुक्त कार्यालय. (2016a). भारत की जनगणना 2011: जिला जनगणना पुस्तिका, सहारनपुर, भाग XII-A—ग्राम एवं नगर निर्देशिका. जनगणना कार्य निदेशालय, उत्तर प्रदेश.
<https://censusindia.gov.in/nada/index.php/catalog/1280>
2. भारत के महापंजीयक एवं जनगणना आयुक्त कार्यालय. (2016b). भारत की जनगणना 2011: जिला जनगणना पुस्तिका, सहारनपुर, भाग XII-B—ग्राम एवं नगरवार प्राथमिक जनगणना सार. जनगणना कार्य निदेशालय, उत्तर प्रदेश. <https://censusindia.gov.in/nada/index.php/catalog/1281>
3. भारत के महापंजीयक एवं जनगणना आयुक्त कार्यालय. (2011a). C-01: धार्मिक समुदाय के अनुसार जनसंख्या—उत्तर प्रदेश, जनगणना 2011. भारत सरकार.
<https://censusindia.gov.in/nada/index.php/catalog/21471>

4. भारत के महापंजीयक एवं जनगणना आयुक्त कार्यालय. (2011b). A-10 परिशिष्ट: जिला-वार अनुसूचित जाति जनसंख्या—उत्तर प्रदेश, 2011. भारत सरकार.
<https://censusindia.gov.in/nada/index.php/catalog/42890>
5. जनगणना कार्य निदेशालय, उत्तर प्रदेश. (2006). भारत की जनगणना 2001: श्रृंखला 10, उत्तर प्रदेश, जिला जनगणना पुस्तिका, भाग A एवं B—सहारनपुर. भारत के महापंजीयक एवं जनगणना आयुक्त कार्यालय.
<https://censusindia.gov.in/nada/index.php/catalog/?page=41&ps=15&sk=village+directory>
6. सिंह, आर. के. (1996). जिला जनगणना पुस्तिका, सहारनपुर, भाग XII-A एवं XII-B, श्रृंखला 25: उत्तर प्रदेश—जनगणना 1991. जनगणना कार्य निदेशालय, उत्तर प्रदेश.
<https://censusindia.gov.in/nada/index.php/catalog/33115>
7. जनगणना कार्य निदेशालय, उत्तर प्रदेश. (1983). जिला जनगणना पुस्तिका, सहारनपुर, भाग XIII-A, श्रृंखला 22: उत्तर प्रदेश—जनगणना 1981. भारत सरकार.
<https://censusindia.gov.in/nada/index.php/catalog/29617>
8. उत्तर प्रदेश सरकार. (1988). उत्तर प्रदेश जिला गजेटियर्स: सहारनपुर. जिला गजेटियर्स विभाग, लखनऊ.
9. नेविल, एच. आर. (1921). सहारनपुर: यूनाइटेड प्रोविन्सेज ऑफ आगरा एंड अवध के जिला गजेटियर्स, खंड II. गवर्नमेंट प्रेस, लखनऊ.
10. श्रीनिवास, एम. एन. (1968). सोशल चेंज इन मॉडर्न इंडिया [Social change in modern India]. यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस.
11. पै, सुधा. (2002). दलित असर्शन एंड द अनफिनिशड डेमोक्रेटिक रिवोल्यूशन: द बहुजन समाज पार्टी इन उत्तर प्रदेश [Dalit assertion and the unfinished democratic revolution]. सेज पब्लिकेशंस.
12. जाफरलो, क्रिस्टोफ़. (2003). इंडियाज़ साइलेंट रिवोल्यूशन: द राइज़ ऑफ़ द लोअर कास्ट्स इन नॉर्थ इंडिया [India's silent revolution: The rise of the lower castes in North India]. कोलंबिया यूनिवर्सिटी प्रेस.
13. जेफ्री, सी., जेफ्री, पी., एवं जेफ्री, आर. (2008). दलित रिवोल्यूशन? न्यू पॉलिटिशियंस इन उत्तर प्रदेश, इंडिया [Dalit revolution? New politicians in Uttar Pradesh, India]. द जर्नल ऑफ़ एशियन स्टडीज़, 67(4), 1365–1396. <https://doi.org/10.1017/S0021911808001812>
14. कुमार, सतेन्द्र. (2018). एग्रेरियन ट्रांसफॉर्मेशन एंड न्यू सोशलिटी इन वेस्टर्न उत्तर प्रदेश [Agrarian transformation and new sociality in Western Uttar Pradesh]. इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली, 53(26–27), 39–47.

15. वर्मा, आयुषी, एवं गुप्ता, इला. (2017). ए स्टडी ऑन वर्किंग कंडीशन ऑफ आर्टिज़न्स इन सहारनपुर वुड क्राफ्ट इंडस्ट्री [A study on working condition of artisans in Saharanpur wood craft industry]. जर्नल ऑफ आर्ट एंड आर्किटेक्चर स्टडीज़, 6(1), 12-17.